डा० प्रभाकर शर्मा शास्त्री

जयप्रकाश शर्मा
पाण्डुलिपि विशेषज्ञ
वैदिनक हेरिटेज एवं पाण्डुलिपि शोध संस्थान, जयपुर

इनका जन्म वैशाख कृष्णा अष्टमी सम्वत् १९९६ तदनुसार १३ अप्रैल १९३९ को राजस्थान की राजधानी जयपुर में हुआ। आपके पितृचरण स्वर्गीय पं० श्री वृद्धिचन्द्रजी शास्त्री, व्याकरण धर्मणास्त्राचार्य थे, जो महाराज संस्कृत कालेज, जयपुर में धर्मशास्त्र विभाग के अध्यक्ष व प्राध्यापक रहे हैं। जाति से श्रीमाली ब्राह्मण , काश्यप, नैर्ध्रुव,(विप्रवर) सामवेद की कौथुमी शाखाध्यायी, उपाध्या व्यासपुरेचा, गौत्र काश्यप है।

आपके पूर्वज राजस्थान व गुजरात प्रान्त के सीमावर्ती ग्राम 'घाणेराव' के निवासी थे, जो कालान्तर में जोधपुर तथा बरार (विदर्भ) में भी रहे। आप लोग जयपुर राज्य के शासकों द्वारा सम्मानित राज्य ज्योतिषी के पद पर रहे हैं। जयपुर नरेश सवाई प्रतापसिह जी के समय से लेकर अब तक आप लोगों का जयपुर नगर ही स्थायी निवास रहा है। अपने कुल पम्परागत संस्कृत-संस्कृति की परम्परा को निरन्तर गति प्रदान करने की दृष्टि से ही श्रद्धेय पितृचरण ने आपको संस्कृत विषय पढ़ाया। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा महाराज संस्कृत कालेज, जयपुर में प्रारम्भ हुई और मैंने १५ वर्ष तक नियमित छात्र के रूप में अध्ययन करते हुए सामवेद प्रवेशिका, धर्मशास्त्र उपाध्याय, धर्मशास्त्र एवं धर्मशास्त्राचार्य परीक्षायें अबाध गति से उत्तीर्ण की। आपने संस्कृत परीक्षाओं के साथ ही राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से हाईस्कूल, इन्टरमीजियेट, बी० ए० तथा एम० ए० परीक्षायें भी उत्तीर्ण की।

एम० ए० परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् राजस्थान कालेज, जयपुर में १३ जुलाई १९६१ से व्याख्याता के पद पर कार्य प्रारम्भ किया और इसके पश्चात् राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोटा, राजकीय कन्या महाविद्यालय श्रीगंगानगर, महाराज कालेज जयपुर, महारानी कालेज जयपुर, स्नाकोत्तर महाविद्यालय बीकानेर तथा श्री कल्याण कालेज सीकर में क्रमशः परिवर्तित (स्थानान्तरित) होते हुए संस्कृत का अध्यापन किया।

आपको राजस्थान विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ० श्री पुरूषोत्तम लाल भार्गव के निर्देशन में

सर्वप्रथम शोध छात्र के रूप में 'जयपुर की संस्कृत-साहित्य को देन १६९९-१८३४ ई० पर शोध-ग्रन्थ प्रस्तुत कर राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर के १७वें दीक्षान्त समारोह (१७ जनवरी १९६५) में पीएचडी उपाधि से सम्मानित किया गया। अब श्रद्धेय पितृचरण की आज्ञा से उक्त विषय के अवशिष्ट समय १८३५ से १९६५ ई० का जयपुर के संस्कृत विद्वानों का ऐतिहासिक विवेचनात्मक शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करने के लिए कार्यरत हैं।

रचनात्मक कार्य

आपने अपने श्रद्धेय पितृचरण की आज्ञा से 'याज्ञवल्क्य स्मृति' के आचाराध्याय का हिन्दी अनुवाद (विशिष्ट व्याख्या सहित) प्रकाशित कर उन्हें ही समर्पित किया। वे अपने जीवनकाल में इस ग्रंथ को प्रकाशित नही देख सके थे। इसके अतिरिक्त दूसरी रचना संस्कृत गद्य प्रभा' है, जो राजस्थान विश्वविद्यालय के बी०ए०के पाठ्यक्रम में निर्धारित है। इसका उद्देश्य वर्तमान गद्य साहित्यकारों को संस्कृत छात्रों से सुपरिचित करवाना है। तीसरी रचना इन्दुमती स्वयंकर वर्णन के नाम से विख्यात है, जो महाकवि कालिदास के महाकाव्य रघुवंश के सर्ग का सव्याख्या हिन्दी अनुवाद है।

विश्वभारती शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर से प्रकाशित होने वाले शोधपत्र 'विश्वम्भरा के सम्पादक एवं प्रबन्ध सम्पादक के रूप में किया गया कार्य शोध-क्षेत्र में स्मरणीय है। आपके अनेक लेख जिनकी संख्या लगभग ७० है विश्वभरा (बीकानेर), शोधपत्रिका (उदयपुर), मरुभारती (पिलानी), अनेकान्त (दिल्ली), मधुमती (उदयपुर), नागरी प्रचारिणी पत्रिका (काशी), अन्वेषणा (उदयपुर), राजस्थान भारती (बीकानेर), सागरिका (सागर विश्वविद्यालय), ज्योतिष्मती (सोलन), आयुर्वेद ज्योति (जयपुर), भारती (जयपुर) आदि उल्लेखनीय पत्र- पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। धर्मशास्त्र के विश्यात लेखक श्री वाचस्पति मिश्र द्वारा लिखित कृत्य-महार्णव नामक महत्वपूर्ण ग्रंथ का सम्पादन डॉ० श्री पुष्करदत्त शर्मा (डूंगर कालेज बीकानेर) के साथ सम्पन्न किया जा रहा है। आपको संस्कृत क्षेत्र में कार्य करने की प्रेरणा देने वाले श्रद्धेय पितृचरण ही रहे हैं।